6. कठोपनिषद् के अनुसार नचिकेता द्वारा यम से मांगे गए वरों का वर्णन कीजिए।

7. अद्वैत वेदान्त के अनुसार मोक्ष का वर्णन कीजिए।

8. कारणवाद के प्रकारों को स्पष्ट करते हुए सत्कार्यवाद का वर्णन कीजिए।

9. विष्णुदेवता के स्वरूप का वर्णन कीजिए।

SA-06

December – Examination 2021

B.A. (Part–III) Examination

SANSKRIT

(Second Paper)

वेद, उपनिषद् तथा भारतीय दर्शन

Paper : SA-06

Time : 1½ Hours] [*Maximum Marks : **70***

निर्देश :- यह प्रश्न-पत्र 'अ' और 'ब' दो खण्डों में विभाजित है। प्रत्येक खण्ड के निर्देशानुसार प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

खण्ड—अ **4×3½=14**

(अति लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को प्रश्नानुसार, एक वाक्य, एक शब्द या अधिकतम **30** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 3½ अंकों का है।

1. (i) सूर्य एवं उषा को किस देवता ने उत्पन्न किया है ?

   (ii) पुरुषसूक्त के ऋषि का क्या नाम है ?

(iii) पुरुष सूक्त के अनुसार देवताओं द्वारा प्रयुक्त यज्ञ में घी (आज्य) क्या था ?

(iv) किन्हीं **चार** दार्शनिक सूक्तों के नाम लिखिए।

(v) ईशावास्योपनिषद् किस वेद की किस शाखा से सम्बद्ध है ?

(vi) कठोपनिषद् के अनुसार 'मृत्यवे त्वां ददामीति' वाक्य में 'त्वां' पद किसके लिए प्रयुक्त हुआ है ?

(vii) कठोपनिषद् के अनुसार यमराज के पुनः पुनः वश में कौन आ जाता है ?

(viii) जैन दर्शन के अनुसार त्रिरत्नों के नाम लिखिए।

खण्ड—ब **4×14=56**

(लघु उत्तरीय प्रश्न)

निर्देश :- किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए। आप अपने उत्तर को अधिकतम **200** शब्दों में परिसीमित कीजिए। प्रत्येक प्रश्न 14 अंकों का है।

2. निम्नलिखित में से किसी **एक** मन्त्र की सप्रसंग व्याख्या हिन्दी भाषा में कीजिए :

(अ) येनेमा विश्वा च्यवना कृतानि
यो दास वर्णमधरं गुहाकः।
श्वघ्नीव यो जिगीवां लक्षमाद-
दर्यः पुष्टानि स जनासः इन्द्रः॥

अथवा

(ब) समानो मन्त्रः समितिः समानी
समानं मनः सह चित्तमेषाम्।
समानं मन्त्रमभि मन्त्रये वः
समानेन वो हविषा जुहोमि॥

3. समवायिकारण एवं असमवायिकारण में अन्तर को स्पष्ट कीजिए।

4. निम्नलिखित में से किसी **एक** की व्याख्या कीजिए :

(अ) ऋतं पिबन्तौ सुकृतस्य लोके गुहां प्रविष्टौ परमे परार्धे।
छायातपौ ब्रह्मविदो वदन्ति पंचाग्नयो ये च त्रिणाचिकेताः॥

अथवा

(ब) आत्मानं रथिनं विद्धि शरीरं रथमेव तु।
बुद्धिं तु सारथिं विद्धि मनः प्रग्रहमेव च॥
इन्द्रियाणि हयानाहुर्विषयाँस्तेषु गोचरान्।
आत्मेन्द्रियमनोयुक्तं भोक्तेत्याहुर्मनीषिणः॥

5. नासदीय सूक्त पर टिप्पणी कीजिए।